प्रातः क्लास 12-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। भगवानुवाचः आत्म-अभिमानीभव। पहले पहले यह जरूर कहना पड़े। यह है बच्चों के लिए सावधानी। बाप समझाते हैं हम बच्चे कहता हूं तो आत्माओं को ही देखता हूं। शरीर तो पुरानी जुती है। यह तो सतोप्रधान बन नहीं सकता। सतोप्रधान शरीर तो सतयुग में मिलेगा। अभी तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बन रही है। शरीर नहीं सतोप्रधान बन रहा है। शरीर तो वही पुराना है। यह तो भ्रष्टाचार से बना हुआ है। अभी तुमको अपने आत्मा को सुधारना है। पवित्र बनाना है। सतयुग में तो तुमको शरीर भी पवित्र गोरा मिलेगा। बाप को याद करना पड़ता है आत्मा को शुद्ध करने लिए। बाप भी आत्मा को देखते हैं। सिर्फ देखने से आत्मा पवित्र नहीं बनती है। वह तो जितना बाप को याद करेंगी उतना शुद्ध बनेंगी। ऐसे तो बाप सभी को देखते रहते हैं, यह हमारे बच्चे हैं। ऐसे नहीं कि देखने से ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। यह तो तुम्हारा काम है बाप को याद करते करते सतोप्रधान बनना है। बाप तो आते ही हैं सिर्फ रास्ता बताने। यह शरीर तो अन्त तक पुराना ही रहेगा। यह तो सिर्फ विकर्म-इन्द्रियां हैं जिन से आत्मा का कनेक्शन है। आत्मा गुल2 बन जाती है तो वि कर्तव्य भी अच्छे करते हैं। वि पक्षी जनावर आदि सभी सतोप्रधान होते हैं। वह भी निडर बन जाते। यहां तो बुलबुल अथवा चिड़ियां मनुष्य को देखकर भागते हैं। वहां तो शेर बकरी को भी डर नहीं रहता। तो ऐसे ऐसे अच्छे पक्षी तुम्हारे आगे घूमते फिरते रहेंगे। वह भी कायदे सिरे। ऐसे नहीं कि घर के अन्दर घुस आवेंगे। गन्द कर के जावे। नहीं। बहुत कायदेवान दुनिया बन जाती है। आगे चल तुमको सा0 होती रहेंगी। अभी मार्जिन तो बहुत पड़ी है। स्वर्ग की महिमा भी अपरअपार है। बाप की महिमा अपरमअपार है तो बाप की प्राप्ती की भी महिमा अपरमअपार है। बच्चों को कितना नशा चढ़ना चाहिए। बाप हमको याद करते हैं। बाप कहते हैं मैं उन आत्माओं को याद करता हूं जो सर्विस करते हैं। वह आटोमेटकली याद आ जाते हैं। आत्मा में मन बुद्धि है ना। समझते हैं यह बच्चे बहुत सर्विस करते हैं। ये सेकण्ड नम्बर में करते हैं। यह तो कोई भी समझ सकते हैं। यह तो खुद भी समझ सकते हैं हम कहां तक सर्विस करते हैं। नम्बरवार तो है ना। पढ़ने वाले अथवा पढ़ाने वाले सभीनम्बरवार ही हैं। कोई तो म्युजियम बनाते हैं, प्रजीडेन्ट गवर्मेन्ट आदि पास जाते हैं जरूर अच्छी रीत समझा सकते होंगे। फर्क तो है ना समझाने का। सभी में अपने2 गुण हैं। पुरुषार्थ अनुसार नम्बरवार गुण आते रहते हैं। कोई में अच्छा गुण होता है तो कहा जाता है यह कितना गुणवान है। यहां भी सर्विस एबुल बच्चे ही मीठे लगते हैं। वह तो सदैव ही मीठा बोलेंगे। कड़वा कब बोल न सके। कड़वा बोलने वाले के लिए कहेंगे इनमें भूत है। इन में भूत की प्रवेशता है। देह अभिमान है नम्बरवन। फिर उसमें और भूत जो मनुष्य में प्रवेश कर दुख देते हैं। तो तुम बच्चों को सर्विस करनी है। कैसे2 मनुष्य आते हैं। जिनकी सेवा करनी है। बिल्कुल अहंकारी बन्दर हैं। बन्दर में अहंकार बहुत होता है। समझते हैं हम तो बहुत चालाक हैं। उछलें कितने मारते हैं। उनको पकड़ना भी मुश्किल है। परन्तु चने मुठी दिखाओ तो झट आ जावेंगे। पकड़ जाते हैं। यह लोभ ने पकड़ाया। कहेंगे इन में समझ नहीं है। वैसमझ हो चने मुठी पर फंस मरा। मनुष्य भी ऐसेभुगरे मुठी पिछाड़ीफंस मरते हैं। बदचलन भी बहुत चलते हैं। बाप कहते हैं इन विचारों का दोष नहीं है। तुमको मेहनत ऐसी करनी है जैसे कल्पपहले की थी। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। फिर आते2 सारी डोर तुम्हारी हाथ में आ जावेगी। तुम जानते हो हम ही विश्व के मालिक थे। यह सिवाय तुम्हारे और कोई की बुद्धि में नहीं होगा कि हम विश्व के मालिक थे। फिर हम ही नम्बरवार राज्य लेंगे। इतना पुरुषार्थ कोई कर नहीं सकते। बुद्धि से समझा जाता है फलानी बहुत अच्छी सर्विस करती हैं। जरूर ऊंच ऊंच पद पावेंगी। इनकी भेट में हम तो कुछ भी नहीं करते हैं। तुम्हारी बुद्धि में भी तो सारा ड्रामा का चक्र है। टाईम भी ठीक बताते हो आठ वर्ष है बाकी। 5भी हो सकते हैं। आठ से जास्ती होने का तो बिल्कुल दम ही नहीं दिखाई पड़ती है। जिन्हों भी वह लोग देते हैं तो टुकड़ा कर देते कि आपस में लड़ते रहे। नहीं उन्हों का इतना

बाद आद कौन लेगा। यह भी उन्हों का व्यापार है ना। ड्रामा अनुसार यह हिस्सें रखी हुई है। खिटपिट तो अन्दर है ना। यहां भी टुकड़े2 कर दिया है। वह कहे यह टुकड़ा हमको वह यह हमको मिले। पूरी विरेपन की गई है इस तरफ पानी जाती जाता है, खेती बहुत होती है। इस तरफ पानी कम। आपस में तड़ भी पड़ते हैं। फिर सिविल वार हो पड़ती है। झगड़ें तो बहुत हैं ना। तुम जो बापके बच्चे बने हो तो तुम भी गाली खाते हो। बाबा ने समझाया था कलंकीधर बनने हैं ना। जैसे बाप गाली खाते हैं वैसे तुम भी खाते हो। तुम भी कलंकीधर बनने वाले हो। कलंक बहुत लगते हैं। यह भी तुम जानते हो। उन बिचारों को तो पता ही नहीं। तुम विश्व के मालिक बनते हो। 84 जन्मों की बात तो बहुत ही सहज समझाई जाती है (आपें ही पूज्य और आपें ही पुजारी भी तुम बनते हो। तुम्हारे में यह ज्ञान बैठा हुआ है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कोई की बुधि में धारण नहीं होती है ड्रामा में उनका पार्ट ही ऐसा है। कर क्या सकते हैं। कितना भी माथा मारें परंतु ऊपर चढ़ नहीं सकते हैं। पुरुषार्थ कितना कराया जाता है। इनकी बुधि में बैठता ही नहीं। तदबीर करते हैं परन्तु तकदीर में भी हो ना। राजधानी स्थापन होती है। उनमें तो सभी चाहिए। ऐसा समझ कर शान्ति में रहना चाहिए। कोई से भी खिटपिट की बात ही नहीं। प्यार से समझाना पड़ता है। ऐसे न करो। यह अशान्ति है। इससे और ही पद कम हो पड़ेगा। समझाना होता है शान्ति से। खुद अशान्त न होना चाहिए। चुप कर देना चाहिए। कोई2 अच्छी बात समझाने से भी अशान्त हो पड़ते हैं। तो छोड़ देना चाहिए। खुद भी अगर ऐसा होगा तो एक दो को तंग करेंगे। यह पिछाड़ी तक होता रहेगा (माया भी दिन प्रति दिन कड़ी होती जाती है।) (महारथियों से माया भी महारथी होकर लड़ती है।) माया के तूफान आते हैं। फिर प्रैक्टीस हो जाती है बाप की याद की।) एकदम जैसे अडोल अचल रहते हैं। समझते हैं माया हैरान करेगी। डरना न चाहिए। कलंकीधर बनने वालों पर कलंक भी लगेंगे। इसमें नाराज़ न होना चाहिए। अखबार वाले कुछ भी खिलाफ डालते हैं। क्योंकि पवित्रता की बात है। अबलाओं पर अत्याचार होंगे। कोई कोई माईयां भी ऐसी होती है। डंडा मारने देरी नहीं करती। पुरुषों को। यह करते हो क्या। क्या सीखकर आये हो, चर्याई। सारी दुनिया कैसे चलती है। तुम टैं बन पड़े हो। आकासुर बकासुर नाम है ना। स्त्रीयों के भी नाम पुतना सुपनखा है। तो अभी तुम बच्चे समझते हो बेहद का बाप मिला है। पहले2 महिमा ही बाप की सुनानी है। बेहद के बाप कहते हैं तुम आत्मा हो। बाप आत्माओं को ही बैठ पढ़ाते हैं। यह नालेज सिवाय एक बाप के और कोई में है नहीं। तुम्हारे में भी नहीं थी। बाप ही सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान दे सकते हैं। रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान यह है पढ़ाई जिससे तुम स्वदर्शनचक्रधारी बन फिर चक्रवर्ती राजा बनते हो। अलंकार यह तुम्हारे है। परन्तु तुम ब्राह्मण पुरुषार्थी हो। इसलिए स्थाई विष्णु को दे दिया है। यह बातें ईश्वर बाप के कोई बता नहीं सकते हैं। आत्मा क्या है परमात्मा क्या है यह कोई भी नहीं जानते। आत्मा के लिए इतना कहेंगे वह भृकुटि के बीच में रहती है। बिन्दी है। ज्यादा कुछ समझा न सकेंगे। आत्मा कहां से आती है, कैसे निकलती है कोई पता थोड़े ही पड़ता है। कब कहते हैं आंखों से निकल गई। यह तो अन्त कोई भी पा नहीं सकते। (अभी तुम जानते हो आत्मा शरीर ऐसे छोड़ेगी। बैठे2 याद में देह त्याग कर देंगी। बाप के पास तो खुशी से जाना है। पुरानी शरीर खुशी से छोड़ना है। जैसे सर्प का मिसाल।) जनावर में भी अकल है। वह मनुष्यों अकल मनुष्यों में भी नहीं है। बाप तो प्रैक्टीकल तुमको सिखलाते हैं। वह सन्यासी लोग सिर्फ दृष्टान्त देते हैं। बाप तो कहते हैं तुमको ऐसा बनना है। जैसे भ्रमरी कीड़े को टन्सफर करती है। तुमको भी मनुष्य रूपी कीड़ों से ब्राह्मण देवता बनाना है। सिर्फ दृष्टान्त नहीं देना है। प्रैक्टीकल करना है। वह तो सिर्फ दृष्टान्त देते हैं। परन्तु उस पर चलते नहीं हैं। वह तो करते ही हैं उलटी बात। ब्रह्म में लीन होना है। तो याद भी ब्रह्म को करते हैं। अभी तुम बच्चों को वापस घर जाना है। बाप से वरसा पा रहे हो अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। वह तो वरसे को जानते ही नहीं। शांति तो सभी को मिलती है। वह भी मनुष्य मात्र हैं सभी शान्तिधाम में जाते हैं। सिवाय बाप के और कोई सर्व

की सदगति कर कैसे सकते। यह भी समझाना होता है। तुम्हारा निवृति मार्ग है। तुम तो ब्रह्म में लीन होने का पुरुषार्थ करते हो। बाप तो प्रवृति मार्ग बनाते हैं। तुम सतयुग में आ नहीं सकते हो। तुम यह ज्ञान किसको समझा भी न सकेंगे। यह बहुत ही गुह्य बातें हैं। पहले पहले तो किसको अलफ बे ही पढ़ाना होता है। बोलो तुमको दो बाप है हद का और बेहद का। हद के बाप पास जन्म लेते हो विकार से। कितने अपार दुःख मिलते हैं। सतयुग में तो अपार सुख है। वहां तो जन्म ही मखन मिसल होता है। कोई भी दुःख आद की बात ही नहीं। नाम ही है स्वर्ग। सुखधाम। बेहद के बाप से बेहद की बादशाही का वरसा मिलता है। पहले है सुख पीछे है दुःख। पहले दुःख पीछे सुख कहना रांग है। पहले तो नई दुनिया स्थापन होती है ना। पुरानी थोड़े ही स्थापन होती है। पुराना मकान कब कोई बनाते हैं। नई दुनिया में तो रावण आ न सके। यह भी बाप समझाते हैं कि बुधि में युक्तियां हो। बेहद का बाप बेहद का सुख देते हैं। कैसे देते हैं आओ तो हम समझावें। कहने की भी युक्ति चाहिए। दुःखधाम के दुःखों का भी तुम सा0 कराओ, कितने अथाह दुःख हैं। अपरम अपार दुःख है। नाम ही है दुःखधाम। इनको सुखधाम कोई कह न सके। सुखधाम में तो श्रीकृष्ण रहते हैं। कृष्ण के मंदिर को भी सुखधाम कहते हैं। वह तो सुखधाम का मालिक था। जिसकी अभी मंदिरों में पूजा होती है। अभी यह (बाबा) ल0ना0 के मंदिर में जावेंगे तो कहेंगे ओ हो यह तो हम बनते हैं। इनका पूजा थोड़े ही करेंगे। हम नम्बरवन बनते हैं तो फिर सेकण्ड थर्ड की पूजा क्यों करें। हम तो सूर्यवंशी बनते हैं। मनुष्यों को थोड़े ही पता है। वह तो सभी को भगवान ही कहते रहते हैं। घोर अंधियारा कितना है। तुम कितने अच्छी रीत समझाते हो। फिर भी टाईम लगता है। जो कल्प पहले लगा था। जल्दी कुछ भी नहीं रुक सकते हैं। हीरे जैसा जन्म यह तुम्हारा अभी का ही है। देवताओं को भी हीरे जैसा जन्म नहीं कहेंगे। वह कोई ईश्वरीय परिवार के नहीं हैं। यह है तुम्हारा ईश्वरीय परिवार। वह है दैवी परिवार। कितनी2 नई बातें हैं। गीता में तो आटे में लून मिल है। कितनी भूल कर दी है कृष्ण का नाम डाल कर। बोलो तुम देवताओं को तो देवता कहते हो, विष्णु देवताय नमः कहते हो। फिर कृष्ण को भगवान क्या कहते हो। विष्णु कौन है यह भी तुम समझते हो। मनुष्य तो बिगर ज्ञान के ऐसे ही पूजा करते रहते हैं। प्राचीन यह देवतायें ही हैं जो सतयुग में होकर गये हैं। अभी कहां हैं। 84 पुनर्जन्म कौन लेते हैं। दैवीगुणों वाले ही फिर आसुरी गुण वाले बनते हैं। सतो रजो तमो में सभी को आना ही है। इस समय सभी तमोप्रधान हैं। यह दुनिया ही आयरनजेड पुरानी दुनिया है। बच्चों को पायन्टस तो बहुत अच्छी समझाते हैं। बैज पर भी तुम अच्छा समझा सकते हो। बाप को, पढ़ाने वाले टीचर को याद करो। परन्तु माया भी कितनी कसम कसा चलती है। बहुत अच्छे2 पायन्टस निकलती रहती हैं। अगर सुनेंगे नहीं तो सुना कैसे सकते हैं। असर कर के बड़े2 महारथी बाहर में इधर उधर जाते हैं तो नुरली बस हो जाती है। फिर पढ़ते ही नहीं। पेट भरा हुआ है। बाप कहते हैं कितनी2 गुह्य2 पायन्ट तुमको सुनाता हूं, जो सुन कर धारण करनी है। धारणा न होगी तो कच्चे पड़ जावेंगे। बहुत बच्चे भी धारण अच्छे2 पायन्ट निकालते हैं। बाबा देखते हैं सुनते हैं। जैसी2 अवस्था है पायन्टस निकाल सकते हैं। जो कब इसने सुनाई न हो। वह सर्विस एबुल बच्चे सर्विस पर ही लगे रहते हैं। मैगजीन में भी अच्छी2 पायन्टस डालते हैं। तो तुम बच्चे विश्व के मालिक बनते हो। बाप कितना ऊंच बनाते हैं। गीत भी है ना सारी बाग तुम्हारे हाथ में होगी। कोई छीन न सकेंगे। यह ल0ना0 भी विश्व के मालिक थे ना। इन्हों को पढ़ाने वाला जरूर बाप ही होगा। यह भी तुम समझा सकते हो। उन्होंने राज्य पद कैसे पाया। मंदिर के पुजारी आद को भी पता नहीं है। तुमको तो बेपनाह खुशी है। यह भी तुम समझा सकते हो। ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है। इस समय तो 5 भूत सर्वव्यापी है। हर एक में विकार है। माया के 5 भूत हैं माया सर्वव्यापी है। तुम फिर ईश्वर को सर्वव्यापी कह देते हो। यह तुम भूल करते हो। ईश्वर सर्वव्यापी हो कैसे सकता। वह तो बेहद का वरसा देते हैं, कांटों को फूल बनाते हैं। समझाने की प्रेक्टीस भी बच्चों को करनी है। अच्छा मीठे2 बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडमार्निंग।